आइआइएम के प्रबंधन से चमक रही चिकनकारी

अमेरिका से लेकर यूरोप तक लखनऊ का चिकन अब चमक रहा है। यहां बने चिकन के उत्कृष्ट परिधान लाखों में बिक रहे हैं। यहां तैयार की गई चिकन की एक साड़ी दुबई में 21 लाख रुपये में बिकी। यह भाव सरकार व आइआइएम इंदौर के प्रयासों से चिकन की वैश्विक ब्रांडिंग के कारण मिल पाया। आइआइएम इंदौर ने एक जिला एक उत्पाद में शामिल चिकन का सर्वे कर रोडमैप तैयार किया, जिससे व्यवसाय से जुड़े दो लाख से अधिक लोगों को मदद मिल रही है। यही नहीं इस वर्ष अनोखी चिकनकारी करने वाली लखनऊ की नसीम बानो को पद्मश्री से अलंकृत किया गया है। चिकन कारोबार के वर्तमान और भविष्य के बारे में बता रहे हैं संवाददाता महेन्द्र पाण्डेय।

बड़ा मुद्दा

चौक में चिकनकारी करती सोनी, सायदा, रमसुन्निशा व वंदना ● रघुनाथ तिवारी

ठाकुरगंज के नेपियर कालोनी की नसीम बानो करीब पांच दशक से चिकनकारी कर रही हैं। एक समय था, जब उन्हें उनके काम का उचित पारिश्रमिक नहीं मिल पाता था। वक्त बदला, चिकन उत्पादों की वैश्विक ब्रांडिंग हुई तो नसीम ही नहीं, उनके जैसे लाखों चिकन कारीगरों को काम मिलने लगा। आज नसीम ही नहीं, इस पेशे जुड़े लाखों लोग संतुष्ट हैं, हालांकि कम काम मिलने से बहुत कारीगर क्षुब्ध भी हैं। भारतीय प्रबंध संस्थान (आइआइएम) इंदौर के सर्वे के अनुसार 98 प्रतिशत लोग इस पेशे से जुड़े रहना चाहते हैं।

चिकनकारी और उससे जुड़े सभी लोगों की बेहतरी के लिए आइआइएम इंदौर ने रोडमैप बनाया है। इसे जिला प्रशासन के सहयोग से आगे बढ़ाया जा रहा है। चिकन कारीगरों की आय बढ़ाने, पलायन रोकने, उत्पादों को बाजार उपलब्ध कराने और डिजाइन सहित गुणवत्ता में सुधार के लिए जिला प्रशासन और आइआइएम इंदौर के बीच कुछ समय पहले एमओयू किया गया था। इसके आधार पर आइआइएम ने चिकनकारी से जुड़े उद्यमी और कारीगरों पर सर्वे कर रिपोर्ट तैयार की है। सर्वे टीम में आइआइएम इंदौर के निदेशक प्रो. हिमांशु राय के नेतृत्व में प्रो. भवानी शंकर और नवीन कृष्ण राय ने चिकन उद्यमियों, कारीगरों और बाजार में जाकर इस उद्योग की समस्या, संभावनाओं पर अध्ययन किया। विशेषज्ञों के सुझाव पर चिकनकारी के कुर्ते का स्टैंडर्ड साइज तैयार किया जाएगा। इसकी डिजाइन और भी आकर्षक बनाई जाएगी। वैश्विक स्तर पर चिकनकारी को लाने के लिए ई-कामर्स प्लेटफार्म पर भी इसे तेजी से आगे बढ़ाया जाएगा। यही नहीं, इसकी कारीगरी करने वाले लोगों की कहानी उत्पाद से जोड़कर उसकी ब्रांडिंग भी की जाएगी।

आइआइएम इंदौर के सुझाव पर अमल : आइआइएम इंदौर के सुझाव पर प्रशासन व उद्योग विभाग अमल कर रहा है। इसके तहत सभी छोटे-बड़े चिकन उद्योग को लेकर फेडरेशन बनाया जाएगा। इसके माध्यम से बाजार, वित्त और अन्य जानकारी उद्यमियों और कारीगरों को दी जाएगी। छोटे कारीगरों के काम को भी ई-कामर्स साइटों पर प्रमोट किया जाएगा। फेडरेशन से कारीगरों को पूरे साल चिकन का काम करने का मौका मिलेगा। अभी चार से पांच महीने ही उन्हें काम मिलता है। चिकनकारी में महिलाओं की रुचि बढ़ाने के लिए करीब 12 हजार 600 रुपये मासिक पारिश्रमिक देने की तैयारी है। चिकन के कुर्ते का स्टैंडर्ड साइज तय किया गया है। एस (छोटा), एम (मध्यम), एल (बड़ा) जैसे साइज को एक मानक पर रखा गया है। फेडरेशन के माध्यम से कारीगरों को पूरा काम और अच्छी कीमत देने का प्रयास करने के साथ ही चिकनकारी की डिजाइनिंग और गुणवत्ता में सुधार करके इसे और आकर्षक बनाने की तैयारी है।

टांकों से नहीं, ब्रांडिंग से मिला रहा दाम : वर्ष 1500 से 1600 के बीच ईरान में यह चिकनकारी कला प्रसिद्ध थी। उस दौरान मुगल सम्राट जहांगीर की बीवी नूरजहां ने भारत में चिकनकारी को स्थापित किया। पहले चिकन की साड़ी में 30 टांके लगाए जाते थे, लेकिन अब चिकनकारी के ज्यादातर जानकार कारीगर 10-15 टांके में ही अच्छी साड़ियां तैयार कर रहे हैं।

गत वर्ष दुबई में 21 लाख में बिकी साड़ी में 15 टांके ही लगे थे। इतने कम टांकों में तैयार चिकन के कपड़े अच्छी कीमत पर बिक रहे हैं। इसकी वजह चिकनकारी की ब्रांडिंग है।

आंकड़ों पर एक नजर

वार्षिक आय	कारीगरों का प्रतिशत
1.92 लाख	1.07
1.25 लाख	1.42
90 हजार से एक लाख	2.85
72 हजार	3.57
60 हजार	6.07
50-58 हजार	2.14
42-48 हजार	10
36-40 हजार	16.07
26-30 हजार	17.14
23-25 हजार	15
16-22 हजार	7.14
10-15 हजार	7.5
6-9.6 हजार	5.36
2.4-4.8 हजार	4.28

चिकनकारी करने वाले कामगारों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। सरकार को चाहिए कि इस पेशे में लगे कारीगरों को स्वास्थ्य सुविधाएं दी जाएंगी। उन्हें आयुष्मान सहित अन्य हितकारी योजनाओं का लाभ दिलाया जाए। नियमित काम दिलाने के लिए भी प्रबंध किया जाना चाहिए।

-राजीव महेंद्रू, उपाध्यक्ष, लखनऊ चिकनकारी हैंडीक्राफ्ट एसोसिएशन

चिकनकारी में बहुत संभावनाएं है। मैंने अपने पिता से अनोखी चिकनकारी सीखी और देश-विदेश के हजारों लोगों को इसका प्रशिक्षण दिया। चिकनकारी कला आज विशिष्ट बन गई है, लेकिन इसकी विशिष्टता को बनाए रखने के लिए कामगारों को सशक्त करना होगा। उन्हें सुविधाएं देनी होंगी।

-नसीम बानो, पद्मश्री एवं चिकनकारी विशेषज्ञ

98 प्रतिशत को पसंद चिकनकारी पेशा

आइआइएम इंदौर के सर्वे में केवल दो प्रतिशत ही कारीगर ऐसे मिले, जो कम काम मिलने से मजबूरन यह पेशा छोड़ना चाहते हैं। बाकी 98 प्रतिशत इसी पेशे में लगे रहना चाहते हैं। अगर उन्हें पूरे साल काम मिले तो दूसरा काम करना नहीं चाहेंगे। काम न मिलने पर उन्हें मजबूरी में दूसरा कार्य करना पड़ता है।